# पहाड़ी शैली



भारत के उत्तर-पूर्वी पहाड़ीयों में राजपुत राजाओं के संरक्षण में एक नवीनकला शैली का उद्भव हुआ। यह कलाशैली मुगल दरबार के निर्वासित चित्रकारों को संरक्षण देने से विकसीत हुई। औरंगजेब के समय से ही मुगलकलाकारों का उपहास शुरू हो गया। धीरे-२ ये कलाकार जिवीको पार्जन हेतु छोटे-२ राजाओं के संरक्षण में चले गये और वहीं बस गये। इन चित्रकारों की पीढी दर पीढी चित्रण किया गया और एक नवीन क्षेत्रिय शैली में विकसित हुई। कुछ विद्वानों ने इस शैली को राजपुत शैली भी कहने की कोशिश की किन्तु राजस्थान में भी राजपुत राजा राज करते थे इसलिये दोनों शैलीयों मे भेद करना व जातिगत आधार पर शैली का उच्चारण करना उचित नहीं होगा। क्षेत्रिय आधार पर यह राज्य पहाड़ीयों में बसे हुये थे इसलिये इसे पहाड़ी शैली कहना अधिक उचित होगा। किन्तु इसका विशाल क्षेत्र होने के कारण पहाड़ी शैली को दो भागों में बाँटा है—

(i) उत्तरी चित्रमाला

(ii) दक्षिणी चित्रमाला।

उत्तरी चित्रमाला में कांगड़ा शैली को रखा गया। जब की दक्षिणी चित्रमाला में बसौली, नुरपुर, गुलेर, कुल्लु को रखा गया है।

(i) बसौली शैली → बसौली जम्मु राज्य में जसरोटा जिले की बसौली तहसील है। इसके

अन्तर्गत 74 गाँव आते थे। ~~इन भोगों के~~
के राजाओं को पाण्डवों के वंशज माना जाता था।
इस राज्य का संस्थापक कुल्लु का राजकुमार आन पाल जिसने 765 ई. मे बंलोर नामक नाम से
इस राज्य की स्थापना की। किन्तु कलात्मक इतिहास के दृष्टिकोण से कृष्णपाल का महत्व पूर्ण योगदान रहा
जिसने 1590 ई. में अकबर के दरबार मे अपनी
उपस्थिती दर्ज करायी। भूपत पाल 1598-1655
शाहजहाँ के दरबार मे सम्मानित राजा बने।
किन्तु नुरपुर का शासक जगतसिंह, भूपत पाल से
ईर्ष्या करता था। जगत सिंह ने भूपतपाल को मुगल
कारावास मे बंद करवा दिया किन्तु भूपतपाल
वहाँ से भाग लिया इसी बिच जगतसिंह ने बसोहली
पर कब्जा कर लिया। ~~बैसे ही~~ भूपत पाल ने जेल
से भाग कर अपनी सेना इकट्ठा करके पुनः अपना
राज्य प्राप्त कर लिया (1627)। इसके पश्चात
संग्राम पाल गद्दी पर बैठा जो अल्प वयस्क था।
12 वर्ष की आयु मे ही उसने सम्पूर्ण साम्राज्य
सम्भाला व मुगल दरबार मे सबसे सुन्दर राजकुमार
के रूप मे प्रसिद्ध हुआ। दारा की बेगम इस राजकुमार
पर मुग्ध हो जाती है। 1673 से 1678 के मध्य हिन्दपाल
शासक रहा। इसके पश्चात कृपाल पाल (जन्म 1650)
शासक बना। जिसके दो रानीयाँ थी। पहली रानी
चन्द्रावल, दुसरी रानी मनकोट। मनकोट वाली
रानी सर्वप्रिय रानी थी। इसके पश्चात धीरजपाल
मैदनीपाल, जितपाल व अमृतपाल शासक बने।
अहमदशाह अब्दाली व सिख आक्रमणों के कारण

बसौहली से व्यापारिक मार्ग खुलने से अमृतपाल के समय में बसौहली बहुत समृद्ध राज्य हो गया। अमृतपाल का विवाह जम्मु की रंजीत देव की पुत्री से हुआ था इसके पश्चात विजयपाल, भुपेन्द्रपाल, कल्याणपाल शासक हुये जो राजा रणजीतसिंह के अधीन शासक रहे।

बसौहली शैली के विषय →

बसौहली शैली में वैष्णव धर्म के वल्लभाचार्य सम्प्रदाय के अनुयायी होने के कारण अधिकांशतः कृष्ण से सम्बंधित चित्र बनाये गये। किन्तु रामायण की एक प्रति भी बसौहली शैली की प्राप्त हुई है इसी प्रकार भानुदत्त कृत रसमंजरी भी प्राप्त हुई है जिसमें नायक-नायिका भेद, रसश्रृंगार को कृष्ण के रूप में चित्रित किया गया है गीतगोविन्द व बारहमासा व व्यक्ति चित्र भी बसौहली शैली के प्रिय विषय रहे हैं यहाँ पर राधा को आत्मा तथा कृष्ण को परमात्मा के मिलन का स्वरूप माना है।

बसौहली शैली की विशेषताऐ →

(i) सहजता एवम् सरलता →, बसौहली शैली में मुगल जैसा सौकुमार्य, कोमलता व परिमार्जन नहीं है किन्तु सरलता, सरसता, शक्ति तथा चमत्कारी रंगों की अपुर्व संवेगात्मक ~~तीक्षण~~ तीक्षणता, सरलता, सरसता, सहज अभिव्यक्ति

तथा आध्यात्मिकता कम व वासनात्मक भावना
ज्यादा है

(ii) हाशिये →
गहरे लाल रंग की पट्टी पर बने कहीं-2 पर
गहरे लाल रंग के स्थान पर पीला सादा रंग
सपाट हाशिये बनाये गये हैं रस मंजरी, गीत
गोविन्द की पृष्ठीका पर संस्कृत मे छन्द लिखे
किन्तु लाल हाशिये पर सफेद रंग से टाकरी लि
में लेख लिखे हुये हैं

(iii) वर्ण → बसौहली शैली में चमकदार एवं अमिश्रित रंगों का प्रयोग किया गया है जिसमे लाल रंग की प्रमुखता है इन रंगों का प्रयोग प्रतीकात्मक रूप से किया गया है जैसे लाल, प्रेम, पीला→बसन्त, सुर्य का ताप, प्रकाश व प्रेम, ज्वर का प्रीक है नीला रंग कृष्ण, बादल एवम् शान्ति का प्रीक है लाल रंग प्रेम के देवता का प्रीक है स्वर्ण एवम् रजत अलंकारिक व कशिदकारी एवम् बिजली की चमक के रूप में, हरा रंग प्रकृती के प्रतिक रूप में चित्रित किया गया है

(iv) प्रकृति → प्रकृति को अलंकारित रूप में गहरे पृष्ठ भूमि पर हल्के रंग से चित्रित की गयी है जिसमे मजनु, आम, आरक्त मोरपंखी को प्रकृति में विशिष्ट स्थान मिला है

(v) वर्षा व बादल → बादल झीना वक्राकार, बादलों में से तीव्र दामिनी स्वर्ण रंग से बनायी गयी है जिनसे कहीं पर कम कहीं पर ज्यादा वर्षा जल की रेखाये कुण्डलाकार, कमलपुष्प के साथ-२ बगुले बनाये गये हैं। जल का किनारा बहुत सुन्दर बनाया गया है।

vi) पशु-पक्षी → बसौहली शैली में सर्वाधिक गायों का चित्रण किया गया है जिसमें गायों को कांगड़ा जैसी हरियाणा जाति की मोटी ताजा गाये न बनाकर दुबली-पतली सूखे पेट की पीचकी हुई लम्बे कान से युक्त सींग वाली गायों को बनाया गया है। यद्यपि अन्य पशु-पक्षियों का भी चित्रण किया गया किन्तु वल्लभाचार्य सम्प्रदाय से सम्बंधित शैली होने के कारण कृष्ण एवम गायों का चित्रण सर्वाधिक किया गया है।

vii) पहनावा → बसौहली शैली में पुरुषों को घेरदार जामा, औरंगजेब कालीन पिछे झुकी हुई पगड़ी, महिलाओं को सुथन चोली ऊपर पिशवाज या ढीला लम्बा घेरदार चोगा, रेशमी या पारदर्शी बनाया गया है। धारीदार घाघरा, चोली पारदर्शी दुपट्टा; ओढ़े महिलाओं का चित्रण किया गया। कृष्ण को पीताम्बरी या पीली धोती, मुकुट एवम मोरपंख से युक्त चित्रित किया गया है।

(viii) आकृतियाँ एवम शारीरिक सौन्दर्य → बसौहली शैली में ढालदार माथे व ऊँची नाक एक ही सपाट रेखा से प्रवाह युक्त बनाई गयी है। नेत्र कमलाकार, शरीर बादामी रंग चित्रित किया गया है।

(ix) आभूषण → आभूषण देवता, मानव, राक्षस एवम राजा को अपनी आवश्यकता के अनुसार मुकुट एवम आभूषण पहनाये गये हैं। कुछ आकृतियों को कुण्डल, हार, कड़े, भुजबन्द, हिरा-पन्ना, के अन्य आभूषणों से पुरुषों को चित्रित किया गया है। महिलाओं को हार, बेसली, नथ, कड़े ऊपरतक करधनी एवम पायल इत्यादी के अतिरिक्त फुंदने भी बनाये गये हैं।

x) भवन → बसौहली शैली में आलेखन युक्त दरवाजे, जालीदार खिड़कियाँ, नकाशिदार लकड़ी या पत्थरों के स्तम्भ अकबरकालीन तरीके में सुन्दर नकाशी युक्त इत्रदान, पुष्पकलश, गुलाब के फूल से भरी हुई तश्तरियों का निर्माण किया गया। पिंजरों में या स्वतंत्र रूप से पक्षी को नायक-नायिका भेद की तर्ज पर चित्रित किया गया है।

# चम्बा शैली



— चम्बा हिमाचल प्रदेश का एक जिला है जो पहले पाँच राज्यों की एक राजधानी थी। पठानकोट से 77 मील दूरी पर स्थित है यहाँ पर श्रीहरिहर नाथ मन्दिर और लक्ष्मीनारायण मन्दिर उत्तर गुप्तकालीन एवम पाल शैली के शिल्प से ~~सुसज्जित~~ सुसज्जित है।

यहाँ का इतिहास दसवीं सदी से प्रारम्भ होता है। इसी समय चम्बा राज्य की स्थापना हुई थी। कला के दृष्टिकोण से 12वीं सदी से इस राज्य का महत्व है। जिसमें गणेशवर्मन ~~गणेशवर्मन~~ 1512 - 1559 प्रताप वर्मन 1559 - 1586 विरभान 1586 - 1589 पृथ्वी सिंह 1641 - 1664 छत्तर सिंह 1664 - 1690 उदयसिंह 1690 - 1720, उग्रसिंह 1720 - 1735, दलालसिंह 1735 - 1748, उमेदसिंह 1748 - 1764, राजसिंह 1764 - 1794, जीतसिंह 1794 - 1808, चढ़तसिंह 1808 - 1844, श्रीसिंह 1844 - 1870 शासक हुये। किन्तु कला के क्षेत्र में पृथ्वी सिंह व उम्मेदसिंह मुख्य हुये। च

— चम्बाशैली के विषय → — चम्बाशैली भागवतपुराण रामायण, ~~दुर्गा~~ दुर्गा सप्तसती, रुकमणी मंगल, पर सर्वाधिक चित्र बने यद्यपी ~~नायि~~ नायक - नायिका, बारहमासा, नायिका भेद पर भी पर्याप्त चित्र बने किन्तु उपरोक्त विषयों का चम्बा शैली में अधिकांशत: चित्र बना।

चम्बा शैली की विशेषतायें →

(i) रेखा → चम्बा शैली में रेखा महिन एवम् कोमल लगी है जो लाल एवम् काले रंग से बनायी गई है।

(ii) वर्ण → चम्बा शैली में बसौहली शैली की तुलना में शीतल रंगों का प्रयोग किया गया है एवम् पीले रंगों का प्रयोग बहुत कम किया गया है। नीले रंग की प्रधानता है।

(iii) आकृती → चम्बा शैली में मानवाकृति लम्बी एवम् हृष्ट-पुष्ट शरीर युक्त बनायी गयी है। जिनमें ऊँचे माथे बड़ी भारी चिबुक बड़े कर्ण स्पर्शी नयन, सुडौल पतली गर्दन बनायी गयी है।

(iv) प्रकृती → चम्बा शैली की प्रकृती में पर्वत, नदी काले मेघ, नीले आकाश, वन-उपवन उद्यान तथा वाटिका को महत्वपूर्ण स्थान मिला है। वृक्षों मे मोरपंख, मजनू, आम, केला, बरगद, कदम पीपल, आवला इत्यादी वृक्षों की प्रमुखता रही है।

(v) वेश-भूषा → चम्बा शैली में वेश-भूषा धोती, उत्तरीय, जहांगीरकालीन पगड़ी, एवम् अन्य वेशभूषा का प्रयोग पुरुषाकृतियों मे किया गया है जबकि महिलाओं को लहंगा,

पारदर्शी आँचल एवम् कंचुकी ~~बेनी~~ पहने बनाया गया है। साथ ही विषय के अनुसार आभूषणों का भी प्रयोग किया गया है।

(vi) पशु-पक्षी → चम्बा शैली में विभिन्न पशु-पक्षी का चित्रण किया गया है किन्तु गायों का चित्रण अधिकांशतः हुआ है। यहाँ पर गाये हरियाणा जैसी बनायी गई जो जम्मु शैली से समानता रखती है।

(vii) त्रि-आयामी प्रभाव → चम्बा शैली में मुगल शैली का प्रभाव होने के कारण खतपरदाज का प्रयोग किया गया है और मुख्य आकृति एवम् गौण आकृतियों में भी खतपरदाज का प्रयोग कर गोलाई लाने का प्रयास किया है।

(viii) भवन → चम्बा शैली में चित्रों की पृष्ठभूमि में भवनों का निर्माण किया गया जो पूर्णतः मुगल शैली के समान है।

चम्बा शैली के चित्रकार → चम्बा शैली के आरम्भिक चित्रकार मुगल शैली में ही प्रशिक्षित थे। और सम्भवतः मुगल दरबार से निकलकर ही चम्बा के राजा की शरण ली। जिनमें से अब तक प्राप्त नाम बंशीधर है। बंशीधर के ही वंशजों ने चम्बा शैली

मे पीढी दर पीढी काम किया। जिनमें से ईश्वर,
रामदयाल, मगनु, दुर्गा, जवाहर, सोनु, मोती,
होशियारलाल, हिरालाल मुख्य चित्रकार के रूप मे
जाने जाते हैं उपरोक्त वंशावली हिरालाल जो (जीवित)
ने इतिहासकारो को बताया। इसके अतिरिक्त अ
चित्रकारो का भी नाम प्राप्त होता है जिनमे से
कृष्णा, लाले, गंगाराम, बिलु (बिलोराम मिस्त्री)
प्रेमलाल, लहरु मिया, तारासिंह, ध्यानसिंह, विन्धीराम
मिका और उसके पौत्र अन्तरा का नाम मुख्य
चित्रकारो मे से आता है। किन्तु मिका के चित्र
सर्वश्रेष्ठ बने है।

# गुलेर

कांगड़ा का राजा हरिचन्द जंगल में आखेट करते समय रास्ता भटक गया। और एक कुंऐ में गिर गया। काफि खोज के बाद भी राजा नहीं मिला। तो उसकी रानी सती हो गई। इसी दौरान हरिचन्द का कोई उत्तराधिकारी न होने के कारण उसका छोटा भाई गद्दी पर बैठा। कुछ समय उपरान्त उस जंगल में किसी किसान ने राजा को कुँए से बाहर निकाल लिया और राजा जब कांगड़ा गया तो सब अस्त-व्यस्त मिला। किन्तु कांगड़ा के राजा अपने छोटे भाई को सिंहासन पर बैठे देख कर वह वापस लौट आया। और गुलेर में अपना राज्य स्थापीत कर लिया। इसका प्राचीन नाम हरिचन्द गुलेर था। कांगड़ा और गुलेर मे मैत्रि सम्बंध रहे क्योंकि कांगड़ा के राजा अपने बड़े भाई हरिचन्द का काफि सम्मान करता था। स्वयं हरिचन्द एक कला प्रेमी शासक था। जिसने आरम्भ से ही चित्रकार नियुक्त कर रखा था। यह वंश कटोच राजवंश के नाम से जाना जाता है। इसी वंश में रूपचन्द 1610-1635, मानसिंह 1635-1661 विक्रमसिंह 1661-1675, दिलीपसिंह 1695-1744, गोवरधन 1744-1773, ~~गुले~~

## गुलेर चित्रकला के विषय →

i) रामायण एवम महाभारत → गुलेर शैली सर्वप्रिय विषय रामायण व महाभारत रहा है। इसीलिये इस शैली में रामायण व महाभारत पर सर्वाधिक चित्र बने।

(ii) दरबारी चित्र → गुलेर शैली में राजा एवम् राजदरबार के विभिन्न मंत्रीगण एवम् मुख्य योद्धाओं के सबीहा चित्र, चित्रित किये गया।

(iii) नायक-नायिका → गुलेर शैली में नायक-नायिका चित्रण भी मुख्य विषय की भाँति चित्रित किया गया है। जिसमें कृष्ण पक्ष, अभिसारिका, उत्का (उत्का), प्रोषित पतिका, मुख्य नायक-नायिका भेद हैं। जिन पर चित्रण किया गया है।

(iv) व्यक्तिचित्र → दरबारी एवम् अन्य व्यक्ति चित्रों का निर्माण किया गया जो लघु आकृति में है।

गुलेर शैली के चित्रकार → गुलेर शैली का मुख्य चित्रकार निक निक्का था। जिसको नैनसुख के नाम से भी जाना जाता है। यह चित्रकार आरम्भ में गुलेर में चित्रण किया किन्तु बाद में चम्बा चला गया था। इसके अतिरिक्त मुगल दरबार ~~शैली से~~ से भी मुगल शैली के चित्रकार गुलेर आये। जो सबीह चित्रण व दरबारी चित्रण में पारंगत थे किन्तु क्षेत्रिय चित्रकार स्थानीय शैली में धार्मिक विषय में चित्रण करने के लिये पारंगत थे।

गुलेर शैली के प्राप्त चित्र → गुलेर शैली में चित्रित एक रेखा चित्र प्राप्त होता है जो एक देवी का है जिसके पन्द्रह भुजाये मकड़ी के जाल के समान बनायी गयी है तथा फिकी स्याही से रेखा चित्र को पक्का किया गया है।

गुलेर शैली की विशेषताये → (i) गुलेर शैली की विशेषतायें मुख्य रूप से रेखाओं के लिये जाना जाता है। क्योंकि गुलेर शैली में रेखायें लाल व काले रंग से मिश्रित बारिक रेखाओं का प्रयोग किया गया है।

(ii) वर्ण → गुलेर शैली में कांगड़ा शैली की भाँति मिश्रित रंगों का प्रयोग किया गया है किन्तु कहीं-२ पर कौतुहल वश चमकदार वर्णों का भी प्रयोग किया गया है।

(iii) रूप → ऊँचा माथा, पैनी नाक तथा इकहरी चिबुक का प्रयोग किया गया है। आकारों को लम्बा एवम सुगठित शरिर युक्त बनाया गया है।

(iv) पहनावा → स्त्रीयों को पारदर्शी आँचल, कंचुकी, छिटदार लहंगा, और कहीं-२ पर सुथन चोली भी बनाई गई है। गहने अल्प संख्या में बने। किन्तु आवश्यकता अनुसार स्वर्ण एवम रजत आभूषणों का प्रयोग किया गया है।

Teacher Signature

(V) गोलाई → गुलेर शैली में, मुगल शैली के कुछ चित्रकार कार्य करते थे। वे परदाज लगाने के पूर्ण अभ्यस्त थे। इसलिये चित्रों में खतपरदाज द्वारा गोलाई लाने का प्रयास किया गया।

(Vi) प्रकृती → गुलेर शैली में प्रकृति अलंकारिक रूप में गहरी पृष्ठभूमि पर हल्के रंगों से प्रकृति चित्रण किया गया है। प्रकृति पूर्ण अलंकारिक है। किन्तु मुगल शैली का पूर्ण प्रभाव होने के कारण प्रकृति में भी खतपरदाज द्वारा त्रि-आयामी प्रभाव परिलक्षित होता है। अधिकांशत: आम, केला, मजनू आदि का चित्रण हुआ।

(Vii) नारी चित्रण → गुलेर शैली में नायिका भेद चित्रों के कारण नारी को विशिष्ट रूप से चित्रित किया है। दुसरा कारण यह भी रहा की गुलेर शैली का उद्देश्य कामुकता पूर्ण होने के कारण नारी चित्रण विशिष्टता से हुआ। एक अन्य कारण यह भी रहा की कांगड़ा शैली में भी नारी चित्रण मुख्यतया हुआ। कांगड़ा शैली व गुलेर की मधुर सम्बंध होने कारण कांगड़ा का गुलेर पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा।

# कांगड़ा शैली

कांगड़ा शैली की नींव राजा घमण्ड चन्द ने डाली। किन्तु उनका उत्तराधिकारी संसार चंद उससे भी ज्यादा कलाप्रिय सिद्ध हुआ। और उससे भी ज्यादा विभिन्न बंधे हुये नियम, कानूनो से निकल कर स्वछंद चित्रों पर बल दिया। जिसके कारण कांगड़ा के चित्रकारों ने अपनी दमित इच्छाओं को, भावनाओं की एवं यौवन सम्बन्धी विभिन्न कल्पना का स्वच्छन्द चित्रण हुआ।

कांगड़ा शैली के चित्रकार → कांगड़ा शैली के चित्रकार गुलेर के राजा गोवर्धन की मृत्यु के पश्चात इधर-उधर भागे जिनमे से कुछ चित्रकार कांगड़ा आ बसे। जिनमें से मानु, परखु एवं कुशलदार (नयनसुख का भतीजा) गुलेर से आये। जिसके कारण गुलेर शैली का पूर्ण प्रभाव कांगड़ा शैली पर पड़ा। परखु के पिता चुमन भी गुलेर का निवासी था जो बाद मे समलोटी जा बसा। किन्तु कांगड़ा शैली मे ही चित्रण कार्य किया। कुशनू एवं परखु इस शैली के मुख्य चित्रकार रहें।

कांगड़ा शैली के विषय → कांगड़ा शैली के मुख्य विषय तो भक्ति काव्य और रीति काव्य रहा है। किन्तु धार्मिक विषयों पर भी चित्रण किया है। जिनमें रामायण, महाभारत, हमीरहठ, नलदमयन्ती, शिव-पार्वती के साथ-2 केशव एवं बिहारीदास की रचनाओं को भी प्रमुख स्थान मिला है।

कांगड़ा शैली के प्राप्त चित्रित प्रतियाँ →

(i) भागवतपुराण की प्रतियाँ → कांगड़ा शैली में दो कारों का एक भागवत पुराण का चित्रण किया गया है। यह प्रति कांगड़ा के संग्रह से प्राप्त हुई है।

(ii) बिहारी सतसई → बिहारी सतसई की प्राप्त एक प्रति एक ही चित्रकार द्वारा ~~चित्रि~~ चित्रीत प्राप्त हुई है। जो चित्रण व अंकन के लिये अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

(iii) गुलेर शैली के चित्रकारों की प्राप्त प्रतियों में मुख्य रूप से तीन धारायें स्पष्ट हैं। किन्तु इनमें से एक धारा ही सर्वश्रेष्ठ रही है।

(iv) कांगड़ा शैली में प्राप्त फुटकर चित्र → कांगड़ा शैली में फुटकर चित्रों में ज्योमैतिक आधार चला किन्तु बाद में चित्रित किये गये फुटकर चित्रों में गोलाई युक्त चित्रण किया गया।

(v) वैष्णव धर्म पर आधारित चित्र → वैष्णव धर्म पर आधारित कांगड़ा से प्राप्त चित्रों में शृंगार दृश्यों को कृष्ण एवम् राधा के रूप में चित्रित किया गया। किन्तु साथ में धार्मिक चित्रों में रामायण को भी स्थान मिला।

कांगड़ा शैली में राजनैतिक विपत्तियाँ → 1806 ई. में नेपाल के गुरखों ने आक्रमणकारीयों के रूप ने संसारचन्द्र के अजेय, अभेदय दुर्ग कांगड़ा को ध्वस्त कर दिया। और समस्त कांगड़ा को अपने कब्जे मे ले लिया। इसी दौरान संसारचन्द्र जंगलो की शरण मे चले गये। यह पड़ाव तीन साल तक रहा। राजा संसारचन्द्र ने सिख राजा रणजीत सिंह की सहायता से इन गुरखों को हटा दिया और 1811 में पुन: कांगड़ा राज्य पर अपना राज्य स्थापित कर लिया। किन्तु राजा की समस्त शक्ति क्षीण हो चुकी थी। इसलिये कांगड़ा का दुर्ग राजा रणजीतसिंह के हाथों में चला गया। और संसार चन्द्र को रणजीतसिंह के अधीन कार्यकरना पड़ा।

उपर्युक्त घटनाक्रम से त्रस्त होकर सजनु दरबार छोड़ कर मण्डी चला गया। और राजा ईश्वरसैन के दरबार में हमीरहट का चित्रांकन किया। इसके अतिरिक्त अन्य चित्रकार गुरखा आक्रमणों के चपेट में आने से मारे गये और कुछ उम्र पाकर मर गये। इसी के साथ कांगड़ा शैली का स्वर्णिम अध्याय समाप्त हो गया।

कांगड़ा शैली में चित्रित नायिका भेद — कांगड़ा शैली में नायक - नायिका भेद पर विशिष्ट रूप से चित्रांकन हुआ है और भौतिक कल्पनाओं, इच्छाओं, भावनाओं को स्वच्छन्द रूप से चित्रित किया गया। इसी कारण नायिका

भेद चित्रण विशिष्ट रूप से हुआ। यहाँ पर नायिका तीन प्रकार की बनायी गयी -
(i) स्वयं की (स्वकीया)
(ii) दूसरे की (परकीया)
(iii) किसी की भी (सामान्य)

नायिका की आठ अवस्थाये होती है। जिन पर कांगड़ा शैली में विशिष्ट चित्रण हुआ।

(i) स्वाधीन पतीका → स्वाधीन पतीका उस नायिका को कहते हैं जिसका योग्यपति अपनी प्रेमीका से प्रेम करने को बाध्य होता है इसचित्र को राधा व कृष्ण के रूप में चित्रित किया गया है जिसमे राधा कृष्ण के पैर धो रही है या कुंज में बैठी हुई राधा कृष्ण के केश सज्जा कर रही है या कृष्ण राधा के पैर दबा रहे हैं या कृष्ण राधा के मेंहदी लगा रहे हैं

(ii) उत्कण्ठिता → उत्कण्ठिता में उस नायिका को दिखा है जिसमे नायिका के निमंत्रण पर उसका प्रेमी समय पर नहीं पहुंचता है और इसी समय नायिका के मन में जो भाव उद्वेलित होते हैं। उस नायिका को उत्कण्ठिता कहते हैं इस भाव को चित्रित करने के लिये - वृक्ष के नीचे नदी के किनारे पत्तियों की सेज पर नायक या नायिका को खड़े अथवा बैठे हुये एक दुसरे के इंतजार में बनाया गया है इसी दृश्य में वृक्ष के नीचे किसी पशु या पक्षी काले बादलों की घुमड़ गरज, चांचल चपला में नायिका अपने ~~प्रेमीका~~ प्रेमिका इंतजार कर रही है

(iii) वासकसज्जा या वासकास्था → वासक सज्जा उस नायिका को कहते हैं जो प्रेमी की प्रतीक्षा में सिढीयों में बैठे या दरवाजे पर खड़ी हुई इंतजार करती है।

(iv) अभिसंधिता :→ अभिसंधिता उस नायिका को कहते हैं जो अपने प्रियतम पर विश्वास नहीं करती। किन्तु विरह और अनुपस्थिती में बहुत दुखी हो जाती है जैसे कृष्ण-राधा का झगड़ा होने पर कृष्ण-राधा को मनाते हैं किन्तु राधा अत्यावश्क व अत्यधिक क्रोधित हो उठती है जिसके कारण कृष्ण लौट जाते हैं इसके पश्चात राधा विरह पीड़ा से व्यथित हो उठती है इसी अवस्था को अभिसंधिता कहते हैं।

(v) खंडिता → जिसका प्रेमी - प्रेमीका को छोड़ कर अन्य से प्रेम करे वह अवस्था खंडिता कहलाती है।

(vi) प्रोषित पताका → प्रोषित पताका उस नायिका को कहते हैं जो अपने प्रेमी से प्रेम तो करती है किन्तु उसका पती या प्रेमी व्यापार में व्यस्त रहने के कारण बाहर रहता है।

(vii) विप्रलब्धा → विप्रलब्धा उस नायिका को कहते हैं जो प्रेमी के निश्चित समय व स्थान तय होने पर भी वह उस स्थान पर नहीं

पहुँचाता है तो नायिका क्रोधित होकर अपने गहने वगैरह खोलकर फेंक देती है।

(viii) अभिसारिका → उस नायिका को कहते हैं जो रात्रि में घर से बाहर मिलने लिये आमंत्रित करती है। अभिसारिका दो प्रकार की होती है - (i) शुक्ल अभिसारिका।
(ii) कृष्ण अभिसारिका।

(a) शुक्ल अभिसारिका → उस नायिका को कहते हैं जो चांदनी रात में घर से बाहर अपने प्रेमी से मिलने जाती है। वह शुक्ल अभिसारिका कहते हैं। ~~तथा विभ~~

(b) कृष्ण अभिसारिका → अंधेरी रात्री में जो नायिका अपने प्रियतम से मिलने जाती है। वह कृष्ण अभिसारिका कहते हैं।

प्रेम की तीन अवस्थायें —

(i) पूर्वराग → पूर्व राग वह अवस्था है जिसमें प्रेमी व प्रेमीका एक दुसरे को वस्तुत: जानते नही है परन्तु पहली मुलाकात बीना कुछ बोले आँखो से बहुत कुछ कह दिया जाता है। इसे ही पूर्वराग कहा जाता है।

(ii) मान → इस अवस्था मे प्रेमी-प्रेमीका आपस में एक दुसरे को जानते हैं। पहचान

भी हैं किन्तु मिथ्या अभिमान के कारण वे एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं यद्यपी वो मिलना चाहते हैं किन्तु एक दुसरे को नीचा दिखाने के कारण या अभिमान स्वरूप मिल नहीं पाते।

(iii) प्रवास → उस अवस्था में उस वियोग को लिया गया है जिसमे प्रेमी या प्रेमीका एक-दुसरे से काफी दूर हैं जैसे - विदेश गमन के कारण उत्पन्न हुआ वियोग।

• नायिका के मन में उत्पन्न 12 भाव →

| | |
|---|---|
| (i) लीला | (vii) मोट्टा इत्या |
| (ii) विलास | (viii) विवोक |
| (iii) ललित | (ix) हेल |
| (iv) वैचित्र्य | (x) बोह |
| (v) विवहार्या | (xi) खोज हो रही है। |
| (vi) किलकिंचित | (xii) |

बारहमासा → कांगड़ा शैली मे बारहमासा पर विशिष्ट चित्रण हुआ। इसलिये बारहमासा के चित्रों का विशिष्ट अध्ययन करने की आवश्यकता है।

चैत्रमास → चैत्रमास के चित्रण में पुष्पित, पल्लवित प्रकृती एवम हरा-भरा दृश्य बनाया गया है। कचनार, सेहेमल, टेसु, ढाक, सिसम,

पलाश के पुष्पित वृक्ष, सरसों के हरे-भरे खेत मंजरी से लदे हुये रसाल वृक्ष बनाये गये हैं। होली उत्सव पर छोटी-२ बालायें टेसु के रंग की करती हुई दिखाया गया है।

(ii) वैसाख, ज्येष्ठ व आषाढ़ → गुलमोर की लाल का हाथीयों को तालाब में पानी पीते हुये तथा जल-क्रिडा करते हुये, सिंह अपनी कंदराओं में जाते हुये, सांप अपने बिलो से बाहर निकलते हुये, नायिका नीले वस्त्र पहने हुये कमलपाश के नीचे बैठे हुये चित्रित किया गया है।

(iii) श्रावण, भादो → श्रावण व भाद्रपद महिने में गर्मी तो रहती है किन्तु बादलों की गर्जन के साथ वर्षा भी होती है, और गर्मी से राहत भी मिलती है इसी प्रकार विरह पीड़ा में प्रेमी-प्रेमीका को भी वर्षा में शान्ति का सुकुन मिलता है इन्ही भावों को चित्रकार ने चित्रित किया है जिसमें मेघ गर्जना, चपला की चमक, कृष्णपक्ष की काली रात्री एवम बगुलो की धवल पंक्तियाँ चित्रित की गई है।

(iv) शरद → शरद ऋतु की ठण्डक, स्वच्छ आकाश कार्तिक की चाँदनी रात के लिये प्रसिद्ध है इसी समय सुर्यास्त सुन्दरतम होता है, ऐसे मौसम में नायिकायें अपने प्रियतम की खोज करती है।

~~(v) हेमन्त →~~

(v) मार्गशीर्ष, हेमन्त → इस महिने में खेतों में पाला पड़ता है और हिमालय के शिखरों से बर्फ पिघलती है जिसकी लयात्मक ठण्डी-२ बयार से मानव कप-कपा जाता है इसी समय नायिका अपने प्रेमी को इधर-उधर खोजती रहती है।

कांगड़ा शैली में ऋतुओं को भी चार भागों में बांटा है -

(i) ग्रीष्म ऋतु
(ii) बसन्त ऋतु
(iii) पतझड़ "
(iv) शरद "

इसी प्रकार दिन को भी चार भागों में बांटा है -

(i) प्रात:
(ii) दोपहर
(iii) सांय
(iv) रात्रि

कांगड़ा शैली की विशेषतायें -

(i) कोमलता एवम् सहजता → कांगड़ा शैली के चित्रों की योजना सहपुरुजन भावात्मकता सुन्दरता, सरसता, कोमलता, छन्द और गति से दर्शक को मन्त्र मुग्ध कर लेती है। इस शैली में रेखा की बारीकी, स्वच्छता, मीने के समान चमकदार रंग, आकृतियों की गोलाई और ~~डोल~~ डोल, श्रेष्ठता के शिखर पर है। चित्र लघु आकार के ही बने हैं तथा कागज पर ही चित्रित किये गये हैं।

उपर्युक्त कागज शियालकोटी प्रयुक्त किया गया है जिसको एक दूसरे के ऊपर मुगलिया तरीके चिपका कर प्रयुक्त किये गये।

(ii) हाशिया → हाशिया पतला बनाया गया है जिस बसौहली शैली का पर्याप्त प्रभाव पड़ा और अधिकांशत: लाल रंग ही प्रयुक्त हुआ है जिसको लिपि ~~बंध~~ तथा भी किया गया है।

(iii) रूप एवम् आकार → कांगड़ा शैली में गोल चिबुक, गुलाबी अधर, सीधी नाक, केश नागिन के समान लहराते हुये, चहरे एक चश्म एवं 1½ चश्म बनाये गये हैं।

(v) वर्ण → आकृतियों में गुलाबी रंगों का प्रयोग किया गया तथा होंठ भी गहरे गुलाबी रंग से बनाये गये। प्रकृति मे विभिन्न शीतल व ऊष्ण रंगों को मिश्रित करके आवश्यकतानुसार प्रयोग किया गया है।

(vi) रेखा → कांगड़ा शैली मे रेखा महीन से महीनतम रेखाओं का प्रयोग किया गया है तथा रक्तपरदाज द्वारा आकृतियों मे एवम् प्रकृति मे गोलाई लाने का प्रयास किया है।

(vii) वस्त्र व आभूषण → (a) स्त्री → लहंगा, कांचुकी, कोहनी तक आस्तीन दार सम्मुख भाग

डोरियो से बंधा हुआ है। और कुछ खुला हुआ है। पारदर्शी दुपट्टा व रेशमी आँचल पहने हुये चित्रित किया गया है। गहनो मे कर्ण-फुल, कुण्डल, नाक की बेसरी, गर्दन मे हार, कलाईयो मे चुड़ियाँ, कड़े, अंगुलियो मे अंगुठियाँ, माथे पर बिन्दी, पैरो मे पायल, भुजाओ मे भुजबन्द, पेशवाज, कमर मे करधनी युक्त महिलाओ का चित्रण किया गया है।

(i) पुरुष → सिर पर कलंगी युक्त पगड़ी, शरीर पर जामा पायजामा (चुड़िदार), पुरुषो के कंधे पर लटकता पटका, कमर पर पेंची व मुगलीया शैली का चित्रित किया गया है। कृष्ण को पीली धोती, मोतीयों की माला, भुजाओ मे भुजबंध, सर पर मयुर पंख, सोने का मुकुट धारण किये हुये चित्रित किया है। ग्वाल-बाल छोटी लंगोटी मे या छोटे-२ जांघिया के समान वस्त्र पहने सर पर साधारण टोपी लगाये हुये, वर्षा काल मे ढाल, कम्बल भी सर पर लटकाये हुये चित्रित किया है। कपड़ो मे सलवटे फहरन एवं कपड़ो के folds यथार्थ एवं कोमल बनाये गये।

(viii) पशु - पक्षी → पशु - पक्षीयों का चित्रण भावों के अनुसार किया गया है। जैसे वर्षा मे बगुला, विरह मे सारस, कबुतर, मोर, विरह संगीनी मे हिरन एवम आगामी संदेश सुनाते हुये कौआ, बतखों का जोड़ा बहुत ही सजीव एवं यथार्थ बनाया गया है। गायो का चित्रण हरियाणा प्रजाति की मोटी ताजा बनाई गई। तथा हाथी एवं

घोड़ा भी बहुत सुन्दर बने।

(ix) वनस्पति एवं प्रकृति → प्रकृति अधिकांशतः अलंकारिक ही चित्रित है किन्तु मुगलीया प्रभाव से प्रकृति को यथार्थ भी चित्रित किया है। कांगड़ा शैली में प्रकृति का चित्रण राजस्थान एवं मुगल शैली दोनों के संगम देखा जा सकता है।

(x) रंग एवं परिप्रेक्ष → कांगड़ा शैली में लाल, पीला, नीला अमिश्रित वर्ण जबकि गुलाबी, बैंगनी, फाकतई, आसमानी, अल्जेरिया, क्रिमसम प्रमुख मिश्रित रंगों का प्रयोग किया गया साथ ही स्वर्ण एवं रजत वर्णों का भी प्रयोग किया गया।

(xi) वादक यंत्र → वाद्य यंत्रों में तंबुरे, ढोलक, मृदंग मंजिरा, वीणा एवं सितार वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया गया।

(xii) मानवीय आत्मा → कांगड़ा शैली में मानवीय आत्मा के दर्शन होते हैं युद्धों एवम भयानक जानवरों से संकट के कारण ~~रात्रि~~ रात्रि में जब प्रेमी सुरक्षित घर लौट आता है तो असीम खुशी का ~~[illegible]~~ आसवासादन होता है यही चित्र की आत्मा है रेखा, रेखांकन, छन्द चित्र निर्माण सम्बन्धी सामग्री एवं तकनीक सभी मुगल शैली के समान है।

गढ़वाल की स्थिती → गढ़वाल जमनोत्री तथा भागीरथ के उद्गम स्थल तथा समीप ही केदारनाथ व बद्रीनाथ तीर्थ स्थल के कारण यह स्थल धार्मिक एवम प्रकृति सौंदर्य के कारण हमेशा श्रेष्ठ रहा है।

गढ़वाल का ऐतीहासिक महत्त्व → दारासिकोह जब औरंगजेब से युद्ध हार कर अफगानिस्तान की ओर भाग रहा था उसी समय उसका पुत्र सुलेमान शिकोह, ग्वालियर में था। सुलेमान शिकोह ने औरंगजेब से बचने और दाराशिकोह से मिलने की रणनीति बनाई। उस समय सुलेमान ने हुलाद्वार होते हुए लाहौर जाने का रास्ता बनाया। जिसमें अपनी सेना के काफि योद्धाओं के साथ रवाना हुआ। और रास्ते में गढ़वाल में अपना डेरा डाल लिया। उस समय गढ़वाल का शासक पृथ्वीशाह था। जिससे सुलेमान शिकोह ने कुछ समय के लिये आश्रय माँगा। पृथ्वीशाह "अतिथी देवो भव:" के सिद्धान्त पर चल कर शरण देने का वचन दे दिया। किन्तु पृथ्वीशाह की आर्थिक स्थिती काफि कमजोर थी। क्योंकि उसका पुत्र मेदनीशाह के शौक बहुत ऊँचे थे। किन्तु फिर भी पृथ्वीशाह ने अपने पुराने महल की मरम्मत करवाकर सुलेमान शिकोह को आश्रय देने का निश्चय कर लिया। किन्तु पृथ्वीशाह धन एवम अन्न की अल्प व्यवस्था होने के कारण कम से कम आदमी लाने के लिये आमंत्रित किया इसलिये सुलेमान ने कुल 17 लोगों के साथ

पृथ्वीशाह के महल में शरण ली जिनमें से कुछ चित्रकार थे। इधर औरंगजेब ने सुलेमान शिकोह को ढूंढने की कोशिश की और जानकारी मिली की सुलेमान अपने पिता से मिलने लाहौर जा रहा है और वर्तमान समय में पृथ्वीशाह की शरण में है। इसलिये जयसिंह के पुत्र रामसिंह की सेना को गढ़वाल भेज दिया। रामसिंह ने पुरे गढ़वाल को घेर लिया। और सुलेमान शिकोह को सौंप देने का आग्रह किया। इस बात से मेदनीशाह तो सहमत था। किन्तु पृथ्वीशाह इस बात से सहमत नहीं हुआ इसलिये मेदनीशाह ने नई रणनीति चुनी। कि ~~हम~~ रामसिंह से युद्ध लड़े गे जिसका सेनापति सुलेमानशिकोह को नियुक्त कर दिया जाये। क्योंकि पृथ्वीशाह बुढा व कमजोर था इसलिये सुलेमानशिकोह एक छोटी सी सेना का सेनापति बनकर ~~युद्ध~~ युद्ध के लिये निकल पड़ा। रामसिंह की बहुत बड़ी विशाल सेना ने सुलेमान को पकड़ लिया। उसी दौरान सुलेमान के साथ जो चित्रकार थे वे वहीं बस गये। इन चित्रकारों के कारण गढ़वाल में एक नयी शैली का जन्म हुआ।

गढ़वाल शैली के प्रमुख चित्रकार → गढ़वाल शैली के चित्रकारों में हरदास एवम श्यामदास प्रमुख थे। जिन्होंने सम्भवतया गढ़वाल शैली की नींव डाली क्योंकि ये दोनों ही चित्रकार सुलेमान शिकोह के बेड़े में थे। जो उसी समय यहीं पर बस गये थे दोनों ही हिंदु ~~थ~~ थे। और चित्रकारी एवम सुनारगिरी दोनों में ही प्रशिक्षित थे। क्योंकि

ये चित्रकार सुनार जाति के थे। इसलिये सुनारगीरि एक सहज ही बात है। दोनों ही चित्रकार राजस्थानी शैली में प्रशिक्षित चित्रकार थे। श्यामदास के वंशजों ने भी इसी कर्म को अपनाया जिसमें मोलाराम पुत्र, हरदास पौत्र, हिरालाल परपौत्र तथा हिरालाल का बेटा मंगतराम ने भी चित्रकारी का ही कार्य किया। मंगतराम के दो बेटे थे जिनमे से एक का नाम व ब्यौरा प्राप्त नहीं किन्तु मंगतराम का बेटा मोलाराम एक दरबारी कवि व चित्रकार के रूप में विख्यात रहा। इस समय जयकिर्तिशाह शासक था। जिसके संरक्षण में मोलाराम चित्रकारी करता था। मोलाराम को 60 गाँव जागीरी व 5 रु दैनिक वेतन मिलता था।

जयकिर्तिशाह एक निर्बल शासक सिद्ध हुआ जिसके कारण प्रद्युम्न सिंह को पुरक शासक के रूप में नियुक्त किया गया किन्तु ~~18~~ 1803 ई. में गुरखाओं की बटालियन ने पुरे गढवाल को घेर लिया और प्रद्युम्न सिंह इस युद्ध में मारा गया। गुरखाओं ने सम्पुर्ण राज्य को तहस - नहस कर दिया। इसी समय गुरखाओं ने तीन लाख लोगों में से दो लाख लोगों को बेच दिया और अंग्रेजों की सहायता से 1808 में राजा सुदर्शनशाह ने गढवाल का शासन पुनः प्राप्त किया सुदर्शनशाह भी एक कला प्रेमी शासक था। जो मोलाराम की चित्रशाला में चित्र अभ्यास करता था। सुदर्शनशाह के पश्चात क्रमशः प्रितमशाह, ~~केशव~~ केसरसिंह, चित्रसिंह, विरेन्द्रसिंह शासक हुये। जिन्होंने भी चित्रों का निर्माण करवाया।

गढ़वाल शैली के प्राप्त चित्र →

(i) आँख मिचोली → इस चित्रका चित्रकार माणकु था चाँदनी रात में कृष्ण तथा ग्वाल आँख मिचोली खेल रहे हैं एक ग्वाल कृष्ण की आँख हाथ से ढंक रहा है और कुछ लोग छिप रहे हैं कृष्ण की आँख बंद करने वाला पीछे मुड़कर छिपने की जगह ढूंढ रहा है तथा कृष्ण उसका हाथ हटा कर चोरी-2 सब देख रहे हैं

(ii) यादव स्त्रियों का अपहरण → यह चित्र चैतु का बनाया हुआ है जिसमें एक चेहरा तो 1/2 चश्मी है एवं शेष अन्य 1/4 चश्मी है यह चित्र अपहरण के समय होने वाली परिस्थितीयों के समय उत्पन्न स्थिती को यथावत दर्शाता है

(iii) रुकमणी प्रणय → यह चित्र भी चैतु का बनाया गया है तथा इस चित्र में रुकमणी के प्रणय प्रसंग को चित्रित किया है

(iv) सती का तप → इस चित्र का निर्माता भी चैतु ही था जिसमें एक सती को तप करते हुये दिखाया है

(v) महादेव की सभा → इस चित्र का निर्माता भी चैतु ही था जिसमें महादेव

को सिंहासन पर बैठे दिखाया गया है और दरबार में अन्य मंत्रीगण बैठे हुये हैं

(vi) राम-लक्ष्मण का वनवास → इस चित्र का निर्माता भी चैतु ही था जिसमें राम-व लक्ष्मण को वनवास जाते हुये दिखाया गया है। ~~उप~~ उपर्युक्त ~~से~~ फुटकर चित्रों के अतिरिक्त पोथी चित्रों का भी निर्माण किया। जिनके विषय गीत-गोविन्द, ~~और~~ बिहारी, सतीराम पर चित्रित पोथीयाँ बनाई गई एवम् इन्ही चित्रों पर फुटकर भी बनाये गये।

गढ़वाल शैली की विशेषतायें →

(i) रेखा → गढ़वाल शैली की रेखायें सरल, सुन्दर, एवम् बारिक बनी हैं किन्तु कांगड़ा शैली जैसा परिमार्जन नहीं है फिर भी सरलता एवम् सरसता के लिये गढ़वाल शैली की रेखायें ~~श्रेष्ठ~~ श्रेष्ठ है।

(ii) मानवाकृतियाँ → गढ़वाल शैली की मानवाकृतियों में कमलाकार नेत्र, लम्बी नाक, गोल-चिबुक, अभिव्यंजक हस्त मुद्रायें तथा अंग भंगिमा मुख्य विशेषता है, कहीं-२ पर काली स्याही ~~का~~ ~~प्रयोग किया गया~~ से पुताई की गई है जो जयपुर शैली का प्रभाव था।

(iii) वस्त्राभूषण → गढ़वाल शैली की स्त्रियों को

कोहनी तक आस्तीन दार चोली, लहंगा, पारदर्शी
कपड़ों की शिकन (सलवटे) कोमल छाया तथा प्रकाश
वास्तविकता का आभास करवाया गया है तथा स्त्रीयों
गहनों से अलंकृत भी किया गया है।

पुरुष आकृतीयों को लम्बा जामा, पायजा-
कमर में पटका, पहने बनाया है। कृष्ण को पीताम्ब-
मोर पंख युक्त मुकुट एवम् जनेऊ धारी चित्रित किया
है। यद्यपी उस आकृतीयों की रंग योजना सामान्य
है पर कृष्ण को नीले रंग से बनाया है।

(iv) भवन → चित्रों की पृष्ठ भूमि में रुहेला
कलम के भवन बने जिनमें शयन कक्ष,
अमलपाश, वटवृक्ष, आदि वृक्षों का चित्रण किया
गया है। भवनों के अन्तर्गत शयन कक्ष के अतिरिक्त
स्नानघर, श्रृंगार कक्ष, रसोई आदि दृश्यों को
भी चित्र में दर्शाया गया है।

(v) प्रकृति → गढ़वाल शैली के चित्रों में यमुना नदी
के तट को समतल बनाकर, पहाड़ीमय
धरातल बनाया गया है। जिनके किनारे विभिन्न वृक्षों
को राजस्थानी व मुगल शैली के प्रभाव से युक्त प्रकृति
का चित्रण किया गया है। आम, गुलमोहर, केला,
अमलपाश, वट व पीपल वृक्ष अत्यधिक मात्रा में
चित्रण किया गया है।

(vi) हाशिये → गढ़वाल शैली के हाशिये साधारण कोटि
के बने हैं किन्तु स्वर्ण व रजत रंगों

द्वारा अलंकृत भी किया है। कहीं-2 पर संगरफी तथा सवज रंग से भी हाशिये बने जो रुहेला कलम का प्रभाव है।

गढ़वाल शैली के विषय → गढ़वाल शैली के विषय कांगड़ा शैली के समान स्वच्छन्द नायक-नायिका, नायिकाभेद, बिहारीसतसई, गीत-गोविन्द एवम् मतीराम पर आधारित विषयों पर चित्रण किया गया है।

# जम्मु शैली



जम्मु शैली का ऐतिहासीक महत्त्व → कलात्मक दृष्टि से जम्मु के राजा ध्रुव 1703 - 1735 मे अस्तित्व मे आये। और कला मे काफी योगदान दिया। राजा रणजीत देव 1735 - 17.. मे शासक रहा। किन्तु अपना शासन बचाने के लिए सिक्खो की अधिनता स्वीकार करनी पड़ी। इस लिए राजनैतिक उथल - पुथल के चलते कला व कलाकारो को काफी क्षती पहुँची। ब्रजराज देव ने सिक्खों का सफाया करके स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। इसी समय विभिन्न पहाडि राज्यों के चित्रकार जम्मु आकर बस गये। और चित्रकला में विशेष योगदान दिया। यद्यपी चित्रों का निर्माण पहले भी हो रहा था। किन्तु जम्मु में पहले आवश्यकतानुसार या तो चित्रकारों को दुसरी जगह से बुलाया जाता था या चित्र ही आयात कर लिया जाता था। किन्तु ब्रजराज देव ने चित्रकारों को पूर्ण तया आश्रय दिया। और चित्र टकसाल बनाये गये जिसके परिणाम स्वरूप आज ऐतिहासीक दृष्टिकोण से काफी चित्र प्राप्त है।

जम्मु शैली के प्राप्त चित्र

(i) राजा बलवंत देव को दरबारियों के मध्य हुक्का पीते हुये बनाया गया है। घोड़ा राजा के सम्मुख प्रस्तुत करते हुये दिखाया गया है। जिसमें राजा बलवंत देव से घोड़ा स्वीकार करते हुये प्रार्थना करते हुये दिखाया जा रहा है।

(ii) राजा बलवंत देव को ~~एक~~ एक चित्रकार अपना चित्र भेंट करते हुये दिखाया गया है।

(iii) यह चित्र दो स्पष्ट टुकड़ों में जुड़ा हुआ है। प्रथम भाग में राजा बलवंत को शामियाने में छत्र के नीचे सिंहासनासिन बैठे हुये चित्रित किया गया है तथा दुसरे चित्र में (दांये) लड़के तथा पुरूष राजा के सम्मुख कत्थक कर रहे हैं। जिसमें राजा सम्मुख मुद्रा में बैठे हुये व ~~उ~~ इनके पीछे गवये भी बैठे हुये हैं।

(iv) पहाड़ी राजाओं को समतल भू-भाग पर शिकार करते हुये बनाया गया है। इस चित्र की खोज L. Bacil gugee ने की जिसने अपनी पुस्तक "दी आर्ट आफ इंडिया एण्ड आर्ट पेन्टर्स" में भी इस चित्र का ब्यौरा दिया।

(v) मिया मुकुन्द देव का सबीह चित्र भी प्राप्त होता है। इसी प्रकार ब्रजराज देव का भी ~~ब~~ सबीह चित्र प्राप्त होता है।

(vi) ~~मिया टिड्डी, मिघालु~~, मिया टिड्डी मिघालु बोटिया का चित्र भी जम्मु में अपनी नीजि शैली में चित्रण किया।

(vii) मिया केलाशवती का चित्रण बन्द्राल शैली मिश्रित जम्मु में प्राप्त किया।

(viii) मिया ब्रजराज देव एवम् दरबारियों तथा ब
के साथ बैठे हुये चित्र प्राप्त होता है।

(ix) चम्बा का नरेश उजागर सिंह अपनी परिचारिका
के साथ व बच्चों के साथ बैठे हुये चित्रित किया
है।

(x) बहादुर सिंह का सबीह चित्र प्राप्त हुआ।
उपर्युक्त चित्रों का वर्णन
"इण्डियन पेंटिंग्स इन दा पंजाब हिलस" नामक पुस्तक
में मिस्टर आर्चर द्वारा भी लिखा गया है और
साथ ही इस पुस्तक में यह भी लिखा कि जम्मु की
कला में राजा घमण्ड चन्द व संसार चंद का पारिवारिक
सम्बंध होने के कारण जम्मु की चित्रकला में कांगड़ा
का महत्वपूर्ण योगदान रहा है और इस शैली
में कांगड़ा शैली के लगभग सभी गुण प्राप्त होते
हैं क्योंकि कांगड़ा शैली का मुख्य चित्रकार नैन-
सुख अपने जीवन के अन्तिम समय में जम्मु आ
बस गया।

जम्मु शैली की विशेषता →

(i) शैली → जम्मु में प्राप्त चित्रों की शैली बसोहली
और चम्बा शैली से काफी मिलती
जुलती है किन्तु अन्तिम दौर में कांगड़ा शैली का
भी प्रभाव पड़ा।

(ii) रेखा → उपर्युक्त वर्णानुसार जम्मु शैली में विभिन्न शैलीयों का प्रभाव होने के कारण विभिन्न प्रकार की रेखाओं का प्रयोग किया गया किन्तु अंतिम दौर में नैनसुख की कलम से बहुत-२ बारिक रेखाओं का प्रयोग किया गया।

(iii) आकृतियाँ → चेहरे बसोहली शैली के समान सरल मुखाकृतियाँ बनाई गई हैं तथा राजा तथा सेवक को अलग-२ दिखाने के लिये उनके शारिरिक प्रमाण में अन्तर किया गया। तथा राजा को हष्ट-पुष्ट सुदृढ मुद्राओं में चित्रित किया गया।

(iv) गोलाई → आरम्भिक जम्मु शैली के चित्रों में छाया-प्रकाश का प्रयोग नहीं किया गया। किन्तु बाद के चित्रों में मुगल-शैली का प्रभाव होने के कारण रेखा परदाज का प्रयोग किया गया।

(v) वर्ण → जम्मु शैली के वर्ण बसोहली शैली के समान अमिश्रित व चमकदार रंगों का प्रयोग किया गया। किन्तु बाद के चित्रों में विभिन्न तानों का भी प्रयोग किया गया।

(vi) पहनावा → ~~मुगल शैली~~ जम्मु शैली में स्त्रियों को लहंगा, चोली, पारदर्शी आंचल, पहने तथा पुरुषों को टकने तक लम्बा जामा

Neha.



पगड़ी लगाये चित्रित किया गया है।

(vii) पशु-पक्षी एवम् भवन → जम्मू शैली में पशु-पक्षी बसोहली शैली के समान तथा भवन मुगल शैली के समान चित्रित किये गये। इस शैली का मुख्य चित्रकार नैन सुख को माना जाता है यह मुगल शैली से ही प्रशिक्षित था।

Teacher Signature

# माऊंट आबू



माऊंट आबू अरावली पर्वत शृंखला की सबसे ऊंची चोटी का नाम है। जो राजस्थान के सिरोही जिले के अन्तर्गत पड़ती है। किन्तु सम्पूर्ण माऊंट आबू राजस्थान में ना होकर गुजरात की सीमा में भी आता है। अर्थात राजस्थान व गुजरात की सीमा क्षेत्र में माऊंट आबू बसा हुआ है। इस स्थान की प्रसिद्धि कई कारणों से है, जिनमें राजस्थान की सबसे ऊंची चोटी गर्मियों में शीतलता प्रदान करना एवं देलवाड़ा जैन मंदिर के कारण यह स्थान धार्मिक श्रेणी में भी महत्वपूर्ण स्थल हो गया है। इसी स्थान पर एक विशाल झील भी है, जिसको नक्की झील कहा जाता है। इस दृश्य में सूर्यास्त का दृश्य अत्यन्त ~~सबसे~~ मनोरम दिखलाई पड़ता है। जो "सन सेट पोइंट" के नाम से प्रसिद्ध है।

माऊंट आबू में विभिन्न धर्मों के मंदिर वास्तुकला के प्रमाण के रूप में मिलते हैं। किन्तु देलवाड़ा के जैन मंदिर संगमरमर का निर्मित है। जिसकी कला अत्यन्त उच्च कोटि का है। इस मंदिर के दो भाग हैं जिनमें से एक भाग विमल ~~वशीष्ट~~ वशिष्ट के नाम से प्रसिद्ध है। जिसका निर्माण विमलशाह ~~के~~ ने करवाया। विमलशाह ने 1032 ई. में गुजरात के काठियावाड़ के राजा का मंत्री भीम ने तैयार करवाई थी उस समय इस मंदिर के निर्माण में 19 करोड़ रुपयों की लागत आई थी। इस मंदिर में जैन धर्म के तीर्थंकर आदिनाथ की विशाल मूर्ति से सुरक्षित है जो 198 फीट x 82 फीट चौड़ाई के बड़े हाल में बनायी है। इस हाल के ~~भारी~~ बाहरी दीवारों का ऊंचाई 52 फीट

है। इस मंदिर में तीन भाग है।
(i) मण्डप
(ii) अंतराल
(iii) गर्भ गृह

(i) मंडप → इस मंदिर का मण्डप 25 फीट वर्गाकार आकार में जिसमें विभिन्न साज-सज्जा युक्त 12 फीट ऊँचे स्तम्भ पर टिका हुआ है। मंडप की ऊपरी छत में विभिन्न प्रकार की लतायें, पत्र पुष्प एवम् मानवाकृतियाँ विभिन्न भावों का प्रदर्शन करते हुये बनाये गये है। यह समस्त कार्य मार्बल में बहुत ही बारिकी से बहुत ही सुन्दरता से बनाया गया है। स्तम्भो पर सुन्दर नारि आकृतियो को विभिन्न मुद्राओं में उकेरा गया है।

(ii) अंतराल → मण्डप और गर्भ गृह के बीच में अंतराल होता है। यह अंतराल भी स्तम्भों द्वारा बनाया गया है इन स्तम्भ की ऊँचाई 12.6 इंच है। जिससे अंतराल एक गलियारे के समान प्रतित होता है। इसकी छत पर 16 प्रकार की विद्यादेवी का अंकन किया गया है। जो चक्राकार चरण के समान बनाया गया है।

(iii) गर्भ गृह → गर्भ गृह मंदिर का मुख्य भाग है। जिसका शिखर छोटा है। इसका मुख्यद्वार आठ स्तम्भों से बनाया गया है जिन पर जैन धर्म के विभिन्न तिर्थंकरो व

अन्य आध्यात्मिक मूर्तियों का अंकन किया गया है। इस मुख्य मंडप में जैन तीर्थंकर आदिनाथ की आसनासिन मुद्रा में बनाया गया है। जिनके नेत्र नासाग्र पर टिके हुये हैं। इनके शरीर पर श्रीवत्सी चिन्ह बनाये गये हैं, सिर पर कुन्तक बाल, आध्यात्मिकता से युक्त चेहरा तेज प्रताप लिये हुये अंकित किया गया है।

मंदिर के प्रवेश द्वार पर संगमरमर के 10 हाथीयों का अंकन किया गया है। जिनके मध्य सेनापति विमल को विभिन्न अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित अश्वारोही अंकित किया गया है। मंदिर के चारों तरफ बौद्ध मठों की तरह छोटे-2 देवालय बनाये गये हैं जिनमें विभिन्न जैन धर्म के तीर्थंकरों मूर्तियाँ स्थापित हैं जिनमें अधिकांशत: मूर्तियाँ आदीनाथ एवम ... बनायी गयी।

लून वसही → लूनवसही मंदिर का निर्माण 1232 ई. में धोलका के मंत्रि वास्तुपाल के भाई तेजपाल ने करवाया था। इस मंदिर में 21 तीर्थंकरों की मूर्तियाँ स्थापित हैं। जिनमें से नेमीनाथ की मूर्ति काले पत्थर से निर्मित कि गई। इस मंदिर की दिवारें एवम स्तम्भों को अलंकृत किये गये। और छत बारिक-2 नकाशीयुक्त से अलंकृत किया गया है। बीच में अलंकृत दण्ड लटका हुआ बनाया गया है। इस मंदिर के बाहरी भाग में हस्थीशाला का निर्माण किया गया है जिसमें 10 श्वेत हाथी बनाये गये हैं। जो संगमरमर के बने हुये हैं किन्तु अब ये हाथी क्षति ग्रस्त हो गये हैं।

पीतलहार मंदिर → माउंट आबू में पीतलहार मंदिर बनाया गया जिसको 15वीं सदी में राय भीम शाह द्वारा बनवाया गया। इस मंदिर में भी मंडप, अंतराल, स्तम्भ गर्भगृह बनाये गये जो विमल वसही से मेल खाता है किन्तु लूण वसही से मेल नहीं खाता है। इस मंदिर में 108 किलोग्राम वजन की पीतल की मूर्ति बनायी गई है जो 41 फीट ऊँची है। आदीनाथ की मूर्ति स्थापित है। इस मुख्य प्रतिमा के अलावा अन्य तिर्थंकरों की भी छोटी-2 मूर्तियाँ स्थापित की गई है और विभिन्न छोटे-2 देवालयों में श्रावकों की प्रतिमायें भी सुसज्जित की गई है किन्तु इनकी आकृति छोटी है।

चौमुखा मंदिर → इस मंदिर का निर्माण 15वीं सदी में किया गया है जिसके चारों तरफ मुख्य द्वार और इस मंदिर में तीन मंजिल है। इसमें पार्श्वनाथ की मूर्तियाँ लगी हुई है जो मूर्ति चौमुखी है और चारों तरफ मुख्य द्वार होने के कारण चारों तरफ ही मंडप बनाये गये हैं। इस मंडप के तल पर अम्बिका देवी की मूर्ति स्थापित है। इसके अतिरिक्त इस मंदिर में 57 ~~परिकर युक्त~~ परिकर मूर्तियाँ बनाई गई हैं।

माउंट आबू के अन्य मंदिरों में प्राप्त मुख्य मूर्तियाँ → माउंट आबू के विभिन्न मंदिरों में विभिन्न धर्मों से सम्बंधित मूर्तियों का निर्माण किया गया यद्यपि जैन धर्म से सम्बंधित मूर्तियाँ अधिक बनाई गई।

किन्तु इसका अर्थ यह नहीं की शैव व वैष्णव धर्म से सम्बंधित मूर्तियो का निर्माण ही नहीं किया गया। विभिन्न छोटे-2 मंदिरो मे विभिन्न धर्मों से सम्बंधित मूर्तियो का निर्माण किया गया। इन मूर्तियो मे मुख्यत: 16 विद्या देवीयाँ, अम्बिका, चक्रेश्वरी, ब्रह्मा शान्ति, सरस्वती, महालक्ष्मी, वीणावादिनी सरस्वती, कृष्ण का कालियामर्दन, कृष्ण व गोपियो के साथ होली प्रसंग, स्होण और नरसिंह की सोडस भुजाओं से युक्त समुद्रमंथन व चौदह रत्न की प्राप्ति, बलि एवम वामन अवतार, कृष्ण जन्म, ~~एवम~~ व बाल लिला की क्रिडा, गोपियों की रास लीला की मूर्तियो का भी अंकन किया गया है।

उपर्युक्त वर्णन से यह सिद्ध होगया है कि माउंट आबू मे विभिन्न धर्म व सम्प्रदाय की मूर्तियो का अंकन किया गया है। साथ ही ऐतिहासीक महत्त्व से सम्बंधित सेनापति भीम, वास्तुपाल की मूर्तियाँ भी बनाई गई। इतना ही नहीं प्रकृति की लताऐ, पुष्पों, पत्रों, कमल, फल इत्यादी को भी बारिकी से बनाया गया है। पशुओं मे हाथी एवम घोड़े विशिष्ट रुप से बनाये गये है।

रणकपुर का जैन मंदिर → रणकपुर का मंदिर भी जैन धर्म से सम्बंधित है। जिसका निर्माण 1438 ई. मे हुआ। इस मंदिर का निर्माण पोरवाल जाति के धनाशाह व रत्नाशाह ने करवाया था। इस मंदिर मे भी जैन धर्म के तिर्थंकरो की मूर्तियां स्थापित की गई। इस मंदिर की विशेषता यह है कि यह मंदिर भी चौमुखा मंदिर है। जिसे त्रिलोक के दीपक

Teacher Signature

भी कहते हैं इस मंदिर का मुख्य शिल्पकार दीपा(सोमपुरा) (ब्राह्मण) था। जिसने इस मंदिर के सम्पूर्ण स्थापत्य का निर्देशन किया। इस मंदिर में ऋषभनाथ की मूर्ति मुख्य रूप से बनायी गई। किन्तु पार्श्वनाथ व नेमिनाथ की मूर्तियाँ भी बनाई गई।

रणकपुर मंदिर के अलंकरण → रणकपुर के मंदिर में भितर व बाहरी भाग में विभिन्न प्रकार के अलंकरण बनाये गये। तथा तोरण द्वारों व स्तभों को भी कलात्मक आकार दिया गया। मुख्य मंदिर के चारों ओर के मंडप एवम मंडप के स्तभों में नारि की प्रतिमा बनाई गई जो इस मंदिर की श्रेष्ठतम कलाकृति के रूप में माना जाता है। इसके अतिरिक्त पुष्प, लताओं, पत्तियों, विभिन्न फलों को बहुत ही बारिकी से मंदिर के बाहरी एवम मण्डप के आन्तरीक भाग में बहुत ही सुन्दर ढंग से बनाया गया है।

स्थापत्य → रणकपुर का मंदिर 48 हजार वर्गफुट क्षेत्र में बनाया गया है जो चौमुखा है इस मंदिर में गर्भगृह में ऋषभनाथ की मूर्ति स्थापित की गयी है व चारों दिशाओं में कुल 24 मण्डप बनाये गये हैं अर्थात् प्रत्येक दिशा में 6 मंडप पंक्तिवार बनाये गये हैं जिनमें कुल 1444 स्तम्भों का प्रयोग किया गया है तथा इस मंदिर को भी तीन मंजिला बनाया गया है इस मंदिर में कुल 85 शिखरों का निर्माण किया गया है जो क्रमबद्ध छोटे से बड़े

बनाया गया है।

रणकपुर मंदिर की मूर्तियाँ → रणकपुर में मुख्यरूप से तो जैन धर्म से सम्बंधित मूर्तियों का निर्माण किया गया। जिनमें ऋषभनाथ, नेमीनाथ एवम् पार्श्वनाथ की मूर्तियाँ प्रमुख रही है। किन्तु अन्य देवी - देवताओं, यक्ष, यक्षिणियों, गंधर्व, वानर, किन्नर, नृत्य मंडली, वाद्यय मंडली, वाद्यय-यंत्र बजाते हुये, नृत्यकरते हुये सुन्दर नारियाँ, बांसुरी बजाते हुये, मंजिरे बजाते हुये आदि शृंगारक मुर्तियाँ बनाई गई।

रणकपुर की विशेषता → इस मंदिर की मूर्तियों मे नारि अंकना प्रमुख विशेषता रही है। जिनको अपने नये माप दण्ड से बहुत ही सुन्दरता से अंकित किया गया है। नारि के अंकन मे क्षीणकटी, पुष्ट स्तन, गोल चेहरा, विशालनेत्र, धनुषाकार भौंहे, अभिव्यंजना पूर्ण आकृति, एवम् कलात्मक आभूषणों का प्रयोग किया है। सुन्दर से सुन्दर नारियों का अंकन किया गया है।

Teacher Signature

# खजुराहो

खजुराहो मध्य प्रदेश के छत्तरपुर जिले में दक्षिणी-पूर्वी छोर पर स्थित है। यहाँ पर पूर्व में बुंदेलखण्ड के चन्द्रवंशी राजाओं का शासन था। जिन्हें चन्देल कहा गया है। इसी वंश के राजाओं ने खजुराहों की कला एवं स्थापत्य का महत्वपूर्ण इतिहास रच दिया। ये लोग पहले सामन्त थे किन्तु यशोवर्मन का पुत्र धंग के समय में कालिंजर के किले को जीतने के पश्चात सम्राटों ~~इन राजा~~ वंशानुगत अपने-२ इष्ट देवों का मंदिर निर्माण करवाते गये। जिनमें कला एवम् स्थापत्य का बेजोड़ नमुना प्रस्तुत है। यद्यपी ये राजा किसी धर्म विशेष से बंधे हुये नहीं थे इसलिये यहाँ के राजाओं ने सभी धर्मों से सम्बंधित मंदिरों का निर्माण करवाया।

कालिंजर में शिव एवम् विष्णु का मंदिर कालिंजर ने ही बनवाया। इसी प्रकार मॉंगतेशवर-हर्षदेव (हर्षदेव), विष्णु मंदिर का निर्माण यशोवर्मन ने करवाया। इस मंदिर की चोटी बहुत ऊँची है जिसमें राम एवम् लक्ष्मण की मूर्तियाँ स्थापित है। विश्वनाथ का सर्वश्रेष्ठ मंदिर राजा धंग ने बनवाया जो कलात्मक दृष्टिकोण से सर्वोत्कृष्ट उदा॰ है। राजा धंग का गुरु वास्तव चंद्रसेन था। देवी जगदम्बा एवम् चित्रगुप्त नगर राजा गंड ने बनवाया। कंदरिया महादेव का मंदिर विद्याधर ने 1017 ई - 1029 के मध्य में बनवाया। इसी प्रकार वामन, आदिनाथ, जवारी, ~~दुल्ह~~ दुलादेवी, चतुर्भुज मंदिर इनके उत्तराधिकारियो ने बनवाया।

खजुराहो के प्रमुख मंदिर स्थापत्य कला →

(i) कंदरिया महादेव → यह मंदिर स्थापत्य के दृष्टिकोण से

बहुत बहुमूल्य धरोहर है जो 116 वर्गफिट चबूतरे पर बना हुआ है। इस मंदिर को सम्राट सतसंग आश्चर्य भी कहते है यहां पर कुल 900 मूर्तियाँ बनाई गई है। इस मंदिर के चोटी के ऊपर कलश बनाया गया है तथा इस मंदिर का मुख्य द्वार पूर्व दिशा में है जो उड़ीसा के मंदिरों से मेल खाता है।

(ii) विश्वनाथ मंदिर → विश्वनाथ मंदिर, कंडरिया मंदिर से ज्यादा ऊंचा है। इस मंदिर में भी वास्तु शिल्प के बेजोड़ नमुने है। यहाँ पर आदमकद एवम आमलख की मूर्तियाँ भी स्थापित है।

(iii) वामन → यह मंदिर बहुत ही प्राचीन है। जिनमे अंग शिखरों का अभाव है। इन मंदिरों के गर्भगृह की दिवारों पर सुंदर मुर्त आकृतियों का अंकन किया गया है।

(iv) आदिनाथ → पार्श्वनाथ मंदिर के समीप आदिनाथ का मंदिर बना हुआ है। यह मंदिर भी बहुत प्राचीन है। इस मंदिर में भी शिखर का अभाव है और ऊंचाई में छोटा है। नया मण्डप बाद में जोड़ा गया था। शिखर वामन मंदिर के शिखर से कम है व पतला भी है। और गंडी का घेरा कम है।

(v) रामचन्द्र → रामचन्द्र मंदिर इस मंदिर में पंच रत्न बनाये गये हैं जिन्हें पंचाग भी कहा जाता है। यह मंदिर उड़ीसा शैली में बना हुआ

है जो पीढ़ो जैसी है। इस मंदिर में प्रदक्षणा पथ भी बने हुये हैं जो मंदिर के बाहर न होकर मंदिर के अन्दर

(vi) चतुर्भुज मंदिर → इस मंदिर में भी प्रदक्षणा मंदिर के भीतर बनाये गये हैं। ~~मध्य भी~~ मंदिर भी रामचन्द्र मंदिर के समान है।

(vii) पार्श्वनाथ मंदिर → यह मंदिर जैन धर्म से सम्बन्धित है तथा छोटा है किन्तु आध्यात्म एवम पवित्रता के लिये बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। यह मंदिर पूर्णतया काल्पनिक दृष्टिकोण से बनाया है। इस मंदिर में जैन धर्म से सम्बंधित मूर्तियां बनाई गई हैं। साथ ही जिन की मूर्तियाँ भी बनी हुई है। इस मंदिर का प्रदक्षिणा पथ मंदिर के बाहर बनाया गया है।

(viii) व (ix) देवी जगदम्बा एवम कुवरमंड मंदिर → ये पूर्णतः नष्ट हो चुका है। किन्तु जो ~~भग्नावशेष~~ भग्नावशेष प्राप्त हुये हैं उनमें उत्तम कोटि के अलंकरण प्राप्त होते हैं।

(x) खजुराई मंदिर → यह मंदिर भी पूर्णतया नष्ट हो चुका है। केवल स्तम्भ अवशेष के रूप में प्राप्त है। जिन पर सुन्दर आलेखन प्राप्त हैं।

(xi) मृदंग महादेव व ब्रह्मा मंदिर → अब तक प्राप्त मंदिरों की शैली से यह मंदिर पूर्णतया भिन्न है। इन मंदिरों का मुख पूर्व दिशा में है

जिनमें सिढ़ियाँ भी बनी हुई हैं इसके पिरामीडों के समान बनी हुई है तथा शेष तीन हिस्सों में जालियाँ लगी हुई हैं।

(xii) विष्णु मंदिर → इस मंदिर का निर्माण यशोवर्मन ने करवाया था। जिसमें राम व लक्ष्मण की मूर्तियां स्थापित हैं। यह मंदिर ऊँची चोटी युक्त है और बहुत ही सुन्दर अलंकरण से युक्त मंदिर का निर्माण किया गया है।

खजुराहो के मूर्तियों के प्रकार → खजुराहो में तीन प्रकार की मूर्तियां प्राप्त हुई हैं। जिनका भेद करके स्वतंत्र अध्ययन करने की आवश्यकता है। यहां पर तीन प्रकार की मूर्तियाँ प्राप्त हैं।

i) पहले प्रकार की वे मूर्तियाँ हैं जो मुख्य दीवार पर अलंकरण के रूप में उत्कीर्ण की गई हैं। थाकोर कर बनाई गई हैं।

ii) दूसरे प्रकार की वे मूर्तियाँ हैं। जिनमें पत्थरों को बहुत गहराई से खोदा जाता है और मूर्तिकार [illegible] आयामी प्रभाव दिया जाता है। किन्तु पार्श्व भाग [illegible] नहीं किया जाता।

iii) तीसरे प्रकार की वे मूर्तियाँ हैं जो [illegible] मूर्त रूप प्रदान करती हैं अर्थात [illegible] आयाम के साथ पार्श्व भाग भी दिखलाई [illegible]

जिनमें सिढ़ियाँ भी बनी हुई हैं इसके पिरामीडों के समान बनी हुई हैं तथा शेष तीन हिस्सों में जालियाँ लगी हुई हैं।

xii) विष्णु मंदिर → इस मंदिर का निर्माण यशोवर्मन ने करवाया था। जिसमें राम व लक्ष्मण कि मूर्तियाँ स्थापित हैं यह मंदिर ऊँची चोटी युक्त है और बहुत ही सुन्दर अलंकरण से युक्त मंदिर का निर्माण किया गया है।

खजुराहो के मुर्तियों के प्रकार → खजुराहो में तीन प्रकार की मूर्तियो प्राप्त हुई है। जिनका भेद करके स्वतंत्र अध्ययन करने की आवश्यकता है। यहाँ पर तीन प्रकार की मूर्तियाँ प्राप्त है।

i) पहले प्रकार की वे मुर्तियाँ हैं जो मुख्य दीवार पर अलंकरण के रूप में उत्कीर्ण की गई है। या कोर कर बनाई गई है।

ii) दुसरे प्रकार की वे मूर्तियाँ हैं जिनमें पत्थरों को बहुत ही गहराई से खोदा जाता है और मूर्तिकार त्री-आयामी प्रभाव दिया जाता है किन्तु पार्श्व भाग का निर्माण नहीं किया जाता।

iii) तीसरे प्रकार की वे मुर्तियाँ हैं, जो चारों तरफ से मूर्त रूप प्रदान करती है अर्थात त्री-आयामी प्रभाव के साथ पार्श्व भाग भी दिखलाई पड़ता है।

खजुराहो की मूर्तियों के वर्गीकरण → खजुराहो की मूर्तियों को 5 भागों में वर्गीकृत किया है क्योंकि यहाँ पर हजारों मूर्तियाँ विभिन्न विषयों पर बनी है इसलिये इनका वर्गीकरण करके अध्ययन करना आवश्यक है —

(i) पहले वर्ग में वे मूर्तियाँ है जो गर्भगृह में स्थापित देव प्रतिमाएं है। उन मूर्तियों को मन्दिर के गर्भगृह में पूजा हेतु स्थापित की गई थी। यू मूर्तियाँ तीन धर्म से सम्बन्धित है इन मूर्तियों में शास्त्रीय नियमों का पालन किया गया है इन मूर्तियों में मुख्यतः वैकुंठ, विष्णु, वराह, वामन, शिवलिंग (एक मुखी, दो मुखी, तीन मुखी, चतुर्थ मुखी) जैन धर्म के तीर्थंकर का आदि मुद्राएं चतुर्भुज, अष्टभुज एवं अधिक भुजाएं से भी मूर्तियों का निर्माण किया है।

(ii) दूसरे प्रकार में रथिकाओं की मूर्तियाँ आती हैं जिनमें गंगा, जमुना, कुर्मवाहनी, नवग्रहों, शिवलिंग, मै... कल्याण सुन्दर, नटराज, महिषासुर, गजासुर, अं... वध, भैरव के विभिन्न रूपों, विष्णु, वैकुण्ठ, विश... के साथ-2 दशावतार, महिष वर्धनी, दुर्गा, सर... चामुंडा, पार्वती, सप्तमातृकाएं, प्रवेशद्वार पर अं... रत मातृकाये, नृत्यरत मातृकाये, सुर्य, चन्द्रमा, अष्टदिक्पाल, ब्रह्माशक्ति, ब्रह्मा, काम, रति, ... रेवन्त, हनुमान, अग्नि, गणेश, गजलक्ष्मी, विद्या... नागों, सिंहवाहिनी (दुर्गा के नौ रूप), अर्द्धनारि... जैन, महावी, नेमीनाथ, शान्तिनाथ, अम्बिका, चक्रे...

पद्मावती, यक्ष, यक्षणीयो, कुबेर, बाहुबली सहीत विभिन्न
जैन धर्म के विभिन्न तिर्थंकरो, एवम जैनाचार्यो की
मूर्तियों के साथ-२ सरस्वती, लक्ष्मी, मांगलिक स्वप्नों
एवम सोलह विद्या देवीयों कि मूर्तियाँ बनाई गई।

(iii) तीसरे प्रकार की विभिन्न मूर्तियाँ है जिनमे मानव के भौतिक एवम कामभावना से युक्त मूर्तियाँ बनाई गई। इस प्रकार कि मूर्तियों को भी विभिन्न भागो में बाँटा गया है –

इस प्रकार की मूर्तियों मे शरीर या अंग प्रदर्शन करते हुये, कामभावना झलकाते हुये नारि का अंकन किया गया है।

दूसरे प्रकार में वे मूर्तियाँ रखी गई है जिनमे स्त्री व पुरूष दोनो कामभावना से युक्त आलिंगनबद्ध या एक दूसरे को पुष्प देते हुये अंकित किया गया है।

तीसरे प्रकार में वे मूर्तियाँ है जिसमें स्त्री व पुरूष को विशिष्ट आलिंगनबद्ध व कामभावना से युक्त मूर्तियों का निर्माण किया गया है।

इस प्रकार की मूर्तियों में स्त्री व पुरूष दोनो को काम भावना से युक्त आलिंगनबद्ध तथा सामान्य रतिक्रिया मे रत अंकित किया गया है।

स्त्री व पुरूषों को काल्पनिक व अप्राकृतिक मुद्राओ में रतिक्रिया मे रत मूर्तियों का निर्माण किया गया है जिनमें सामान्य शारीरिक संरचना व असामान्य घुमाव व गोलाई लिये हुये जो वास्तविकता से बहुत परे है।

(ii) पशु एवम पक्षीयों या मानव एवम पशुओं को असामान्य तरिके से रतिक्रिया में रत अंकित किया है। ये मूर्तियाँ भी पुर्वतया काल्पनीक आधार पर बनाई गई है।

(iv) सैन्य क्रिया की मूर्तियाँ → इस प्रकार की मूर्तियों में राजा, सेनापति एवम सैनिक को विभिन्न अस्त्र, शस्त्र व विभिन्न प्रकार के युद्ध करते हुये दिखाया गया है। इन सैनिकों के पास उस समय जितने अस्त्र-शस्त्र थे उन सभी साजो सामान से सुसज्जित सेना या सैनिको को बनाया गया है। जिनमें सर्वश्रेष्ठ रूप से लक्ष्मण या राम को रावण से युद्ध करते हुये सैनिक या सेनापति के रूप में साजो सामान युक्त बनाया गया है।

(v) पाँचवी प्रकार की वे मूर्तियाँ है जो अलंकरण के रूप में प्रयुक्त की गई। इस प्रकार की मूर्तियों में पशु-पक्षियों, वनस्पति, प्रकृति व ज्यामितिक आधार पर श्रीवत्स, स्वस्तिक चिन्ह, मांगलिक चिन्ह, ब्रह्मा, शिव, कीचतगज एवं को अलंकरण हेतु बनाया गया। कई आकृतियों में तो शारीरिक संरचना के ऊपर भी श्रीवत्स चिन्हों से अलंकृत कर दिया गया है।

खजुराहों की मूर्तियों की विशेषताऐं →

(i) खजुराहों की मूर्तियां वास्तविक शास्त्री नियमों से बनी है किन्तु बाद की मूर्तियों में भावों की

PAGE NO.
DATE
की जुबानी
की कहानी
Neetu
BOMBAY DYEING
30%
discount
SILVER STREAMS
FLORENTINE
SATIN DREAMS
PRETTY PARIS
FLAVOUR
Holiday
Package
3 Nights & 4 Days
Hotel Stay only
lifetime

आपने दो विषय पूछे हैं – "कम्पनी शैली (Company style)" और "राजा रवि वर्मा के चित्र" – चलिए पहले कंपनी शैली से शुरू करते हैं, और फिर विस्तार से राजा रवि वर्मा की कला, उनके चित्रों की विशेषताएँ, महत्व और कुछ प्रसिद्ध कृतियों पर चर्चा करते हैं।

## १. कंपनी शैली (Company style) — विस्तृत जानकारी

"कम्पनी शैली" या "Company painting / Company style" भारत में 18वीं-19वीं शताब्दी में विकसित एक मिश्रित (hybrid) चित्रकला शैली है।

### उत्पत्ति एवं कारण

- यह शैली विशेष रूप से भारत में भारत सरकार की पूर्ववर्ती संस्था, ईस्ट इंडिया कंपनी (East India Company) के अधिकारी और सिपाही के लिए काम करने वाले कारीगरों ने विकसित की। Hence नाम "Company style" पड़ा।
- ब्रिटिशों और यूरोपीय ग्राहकों की रुचि भारतीय दृश्यों, लोक जीवन, प्राणी-पक्षी, स्मारकों और प्रदर्शनात्मक घटनाओं को चित्रित करने में थी। भारतीय चित्रकारों ने स्थानीय शैलियों (राजपूत, मुगल, अन्य पारंपरिक शैलियाँ) के तत्वों को अपनाया और उन्हें यूरोपीय पर्सपेक्टिव, शेडिंग, प्रकाश-छाया आदि तकनीकों के साथ मिश्रित किया।
- यह शैली मुख्यतः उन स्थानों पर विकसित हुई जहाँ ब्रिटिश व्यापार और प्रशासन केंद्र थे – जैसे मुर्शिदाबाद, कोलकाता, दिल्ली, लखनऊ, पटना आदि।

### विषय-वस्तु (Subjects)

कम्पनी शैली में चित्रित विषय बहुत विविध होते थे। इनमें प्रमुख विषय इस प्रकार हैं:

- भारतीय जनता, जनजीवन, वेशभूषा, व्यवसाय, जाति-धार्मिक जीवन आदि
- स्मारक, मंदिर, महल, स्थापत्य दृश्यों (architecture), ग्लोबल टूरिज़्म स्थलों के चित्र
- फल, पेड़, पुष्प, पशु-पक्षी – प्राकृतिक इतिहास (natural history) चित्र
- त्योहार, दृश्यरेखा (festivals), संगीत, नृत्य आदि
- कुछ चित्रों में सौन्दर्यात्मक या कामुक (erotic) विषयों को भी शामिल किया गया

### तकनीक और शैलीगत विशेषताएँ

- अधिकांश चित्र **कागज** पर जलरंग (watercolour) या ओपेक (opaque) रंगों से बनाए जाते थे; कभी-कभी अभ्रक (mica) या अन्य पृष्ठ पर।

- रंगमिश्रण (blending), प्रकाश-छाया (shading), रेखीय दूरी (linear perspective), प्रकाश व छाया का प्रयोग, ऑरियंटल और यूरोपीय तकनीकों का संयोजन इन चित्रों की विशेषता है।
- आकार: अधिकांश चित्र छोटे होते थे—मिनीचर पेंटिंग की शैली में, ताकि उन्हें "मुरक्का" (album) में रखा जा सके। लेकिन प्राकृतिक इतिहास (पक्षी, पौधे) वाले चित्र अधिक बड़े बनाए गए।
- स्थापत्य चित्रों में समक्ष (frontal) दृष्टिकोण अधिक दिखता है, विवरण अधिक सटीक होता है।

## प्रमुख चित्रकार और हस्तियाँ

- कुछ प्रमुख चित्रकार जिन्होंने कंपनी शैली में काम किया: सेवक राम, शिवलाल, इश्वरी प्रसाद, गोपाल चंद, रामप्रसाद आदि
- डेल्ही और मुगल प्रभाव वाले चित्रकार जैसे **गुलाम अली खान (Ghulam Ali Khan)** ने भी कंपनी शैली में काम किया।
- "इम्पी एल्बम (Impey Album)" — जलचर, पक्षियों, जीव-जंतुओं का संग्रह – एक प्रसिद्ध उदाहरण है जिसे कंपनी शैली में बनाया गया था।

## अवधि और पतन

- यह शैली 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर 19वीं शताब्दी तक प्रमुख रही।
- 19वीं शताब्दी में जब ब्रिटिशों ने कलात्मक शिक्षाशालाएँ (Art Schools) खोलीं और पेंटिंग की आधुनिक और पश्चिमी शैलियाँ लोकप्रिय हुईं, तब कंपनी शैली की मांग कम हुई।
- वहीं **फोटोग्राफी** का आगमन इस शैली के पतन में एक बड़ा कारण माना जाता है – चूंकि फोटोग्राफी ने लोगों को वास्तविक छवि तुरंत दिखाने का साधन दे दिया।
- हालांकि, 20वीं सदी तक कुछ कलाकार इस शैली को बनाए रखते रहे; जैसे इश्वरी प्रसाद को इस शैली का आखिरी चित्रकार माना जाता है।

## प्रभाव और आलोचना

- कंपनी शैली ने भारतीय चित्रकला पर एक नया युग प्रारंभ किया जिसमें भारतीय कलाकारों ने यूरोपीय तकनीकों को आत्मसात किया।
- इस शैली ने भारतीय जीवन, वेशभूषा, परंपराएँ विदेशी और भारतीय दर्शकों दोनों को दिखाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- आलोचना: कई कला समीक्षक मानते हैं कि कंपनी शैली *बहुत व्यावसायिक* और *ग्राहक उन्मुख* थी, और उसमें "कलात्मक आत्मा" की कमी थी। इसके चित्र कभी-कभी सामान्य और सजावटी लगे।
- इसके प्रभाव ने बाद में भारतीय आधुनिक कला पर असर डाला, विशेषकर भारतीय चित्रकारों ने इस मिश्रण शैली से प्रेरणा ली।

---

## २. राजा रवि वर्मा – जीवन, चित्रकला और शैली

### जीवन परिचय

- राजा रवि वर्मा का जन्म **29 अप्रैल 1848** को **किलीमानूर (Kilimanoor), त्रावनकोर राज्य (अब केरल राज्य)** में हुआ।
- उनका पूरा नाम **Ravi Varma** था, "राजा" की उपाधि बाद में उन्हें दी गई।
- उन्होंने 2 अक्टूबर 1906 को निधन पाया।
- रवि वर्मा भारतीय आधुनिक कला के पथप्रदर्शक माने जाते हैं क्योंकि उन्होंने पारंपरिक भारतीय विषयों को यूरोपीय तकनीकों (तेल चित्रकला, प्रतिकृति मुद्रण आदि) से जोड़ा।

### शैली और तकनीक

- रवि वर्मा तेल चित्रकला (oil painting) को भारत में लोकप्रिय बनाने में अग्रणी थे।
- उन्होंने **यूरोपीय यथार्थवाद (European realism / illusionism)** तकनीकों को अपनाया – प्रकाश-छाया, पर्सपेक्टिव, रूपों की त्रिविमीयता आदि।
- इसके साथ ही उन्होंने भारतीय पौराणिक कथाएँ, हिन्दू देवी-देवताओं, महाकाव्य प्रसंग आदि को चित्रित किया और उन्हें "मानव" रूप में प्रस्तुत किया – जिससे ये विषय आम जनता के दृष्टिकोण से और अधिक संवेदनशील और सजीव बन गए।
- एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि उन्होंने *लिथोग्राफ़ी* (reproduction lithographs / chromolithographs) को अपनाया, जिससे उनके चित्रों की प्रतियाँ बड़े पैमाने पर प्रचलित हुईं और आम जनता तक पहुँचीं।

### विषय-वस्तु

उनके चित्रों में निम्न विषय विशेष रूप से देखने को मिलते हैं:

1. **पौराणिक / धार्मिक विषय**
   - महाभारत, रामायण, पुराणों से दृश्यों का चित्रण – जैसे *शकुंतला, राम-लीला, उर्वशी-पुरुरव* आदि।
   - देवी-देवताओं, देवी लक्ष्मी, सरस्वती आदि की चित्रावलियाँ।
2. **नारियों (Devotional / Portrait of women)**
   - महिला श्रृंगार, घरेलु दृश्य, सौंदर्य और अभिज्ञता पर चित्र – यह उनका बहुत प्रिय विषय था।
   - वे नारी को गरिमा, सौम्यता, सुंदरता का प्रतिनिधि मानते थे।
3. **पोर्ट्रेट (Portraits)**
   - रियासतों के शासकों, राजघरानों के लोगों, जनता आदि के चित्र।

4. **दृश्य कलाकार / जीवनदृश्य**
    - कभी-कभी प्राकृतिक दृश्य, वृक्ष, भूमि, पृष्ठभूमि आदि का चित्रण।

## प्रसिद्ध कृतियाँ और उनकी विशेषताएँ

नीचे कुछ प्रमुख चित्र और उनकी विशेषताएँ दी जा रही हैं:

| चित्र | वर्ष | विशेषता / विषय | टिप्पणी |
|---|---|---|---|
| *Galaxy of Musicians* | 1889 | भारतीय महिलाओं के गायक व वाद्य यंत्रों के साथ चित्रण | इसमें विभिन्न जातियों की महिलाएँ दिखती हैं, वेशभूषा, संपर्क आदि चित्रित। |
| *Nair Lady Adorning Her Hair* | 1873 | नायर महिला बाल सजाते हुए | इस चित्र ने उन्हें राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई। |
| *Shakuntala Patralekhan* | 1876 | शकुंतला पत्र लेखन करती हुई | इस चित्र ने उन्हें प्रशंसा दिलाई और एक काव्यात्मक दृश्य प्रस्तुत किया। |
| *There Comes Papa* | 1893 | बेटी और पोते पिता की ओर देखते हुए | परिवार और भावनात्मक बंधन का चित्र। |
| *Shakuntala* (थोड़ी अलग रचना) | 1898 | शकुंतला पथ पर जा रही, काँटा निकालने का बहाना | दृश्य और भावनात्मक द्वंद्व को दर्शाती है। |
| *Reclining Nair Lady* | 1902 | एक नायर महिला पुस्तक के साथ पढ़ते हुए लेटी हुई | यूरोपीय प्रभाव और भारतीय विषय का संयोजन। |

## महत्व और विरासत

- रवि वर्मा ने भारतीय कला को एक *समकालीन और जनसमूह तक पहुंचने वाले रूप* में प्रस्तुत किया। उनकी लिथोग्राफ़ बनावट ने उन्हें घर-घर में लोकप्रिय बनाया।
- उन्होंने पारंपरिक धार्मिक चित्रों को आधुनिक रूप दिया — देवी-देवताओं को मानवीय भावपूर्ण रूप में प्रस्तुत किया।
- उनका काम भारतीय बॉलेंस (balance) और सौंदर्य की अवधारणा को पश्चिमी यथार्थवाद के साथ जोड़ता है।
- आज, उनके चित्र भारतीय कला इतिहास में प्रेरणा और अध्ययन का विषय हैं।

- उनके चित्रों की असली प्रतियाँ संग्रहालयों में सुरक्षित हैं, जैसे कि **राजा रवि वर्मा आर्ट गैलरी, केरल** में काफी चित्र प्रदर्शित हैं।

## चुनौतियाँ और आलोचनाएँ

- कुछ आलोचक कहते हैं कि रवि वर्मा की कला में "कॉपी-प्रकाशन" का अधिक महत्व हो गया – यानि प्रतियों को उत्पादित करना मुख्य व्यवसाय बन गया।
- कुछ विद्वानों का कहना है कि उनकी शैली आदर्शकरण (idealization) अधिक करती है, जिसमें यथार्थ जीवन की जटिलताएँ कम दिखाई देती हैं।
- फिर भी, वह भारतीय कला में एक पुल का काम करते हैं – पारंपरिक और आधुनिक, भारतीय और पश्चिमी के बीच।

---

अगर आप चाहें तो मैं आपको **राजा रवि वर्मा की कुछ चित्रों का विस्तृत विश्लेषण** कर सकता हूँ, जैसे *Shakuntala*, *Galaxy of Musicians*, *There Comes Papa* – उनके रंग संयोजन, रचना (composition), भाव-भंगिमा आदि पर। क्या मैं वो विश्लेषण प्रस्तुत करूँ?

**बंगाल स्कूल के चित्रकारों का विस्तृत वर्णन**

**परिचय:**

बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट (Bengal School of Art) भारत में एक प्रमुख कला आंदोलन था, जिसकी शुरुआत 20वीं सदी के प्रारंभ में हुई। यह आंदोलन भारतीय परंपरागत कला को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से शुरू हुआ और ब्रिटिश औपनिवेशिक शैली (पश्चिमी अकादमिक शैली) के विरोध में था। इसका मुख्य केंद्र कोलकाता (तत्कालीन कलकत्ता) था, इसलिए इसे "बंगाल स्कूल" कहा गया।

---

## ✨ मुख्य चित्रकार और उनका योगदान:

### *1. अबनिंद्रनाथ टैगोर (Abanindranath Tagore)*

- **जन्म:** 1871 | **मृत्यु:** 1951
- **भूमिका:** बंगाल स्कूल के संस्थापक और मार्गदर्शक।
- उन्होंने ब्रिटिश यथार्थवादी चित्रण शैली को अस्वीकार कर भारतीय परंपरागत शैली (मुगल, अजंता, राजस्थानी, जापानी आदि) को अपनाया।
- उनकी चित्रशैली में भारतीयता, सूक्ष्मता और आध्यात्मिकता का मेल था।
- **प्रसिद्ध कृति:** *भारत माता* – जिसमें भारत को एक देवी के रूप में दर्शाया गया है।

### *2. नंदलाल बोस (Nandalal Bose)*

- **जन्म:** 1882 | **मृत्यु:** 1966
- अबनिंद्रनाथ टैगोर के शिष्य और शांतिनिकेतन (विस्व भारती) में कला शिक्षा के प्रमुख स्तंभ।
- भारतीय मिथकों, लोककथाओं और ग्रामीण जीवन को अपने चित्रों का विषय बनाया।
- **प्रसिद्ध कृति:** *शिव और सती, महात्मा गांधी की चित्रावली* (1930 में नमक सत्याग्रह के समय बनाई गई थी)।
- उन्होंने अजंता शैली को पुनर्जीवित किया और स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ी चित्रकला की नींव रखी।

### *3. अशित कुमार हालदार (Asit Kumar Haldar)*

- **जन्म:** 1890 | **मृत्यु:** 1964
- अबनिंद्रनाथ टैगोर के भतीजे और उनके प्रभाव में प्रशिक्षित।
- ऐतिहासिक और पौराणिक विषयों पर कार्य किया, विशेषकर बुद्ध से संबंधित चित्रों के लिए प्रसिद्ध।
- उन्होंने अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

*4. कल्याणदास गुप्ता (K. G. Gupta)*

- बंगाल स्कूल के कम प्रसिद्ध परंतु प्रतिभाशाली चित्रकारों में से एक।
- उनकी चित्रकला में भारतीय पुराण, नारी सौंदर्य और शांति का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

*5. सारदा चरण उकील (Sarada Ukil)*

- अबनिंद्रनाथ टैगोर की परंपरा को आगे बढ़ाया।
- उन्होंने दिल्ली में 'उकील स्कूल ऑफ आर्ट' की स्थापना की।

---

## 📌 बंगाल स्कूल की विशेषताएँ:

1. **भारतीय परंपरा पर बल:** चित्रों में भारतीय संस्कृति, मिथकों, धर्म, और इतिहास को केंद्र में रखा गया।
2. **मुगल, राजस्थानी, और अजंता शैली का प्रभाव।**
3. **मूल्यबोध और भावुकता:** पश्चिमी यथार्थवाद की तुलना में बंगाल स्कूल ने भावना, भक्ति और आध्यात्मिकता को चित्रों में दिखाया।
4. **हल्के रंग, मुलायम रेखाएँ और बारीकियों पर ध्यान।**
5. **स्वदेशी आंदोलन से जुड़ाव:** बंगाल स्कूल भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से भावनात्मक रूप से जुड़ा हुआ था।

---

## 🎨 बंगाल स्कूल का प्रभाव:

- इस आंदोलन ने भारतीय कला को औपनिवेशिक प्रभाव से निकालकर सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर किया।
- रविंद्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी जैसे नेताओं ने इस कला शैली को सराहा।
- यह भारतीय आधुनिक कला का आधार बना और बाद में शांतिनिकेतन, बड़ौदा, और अन्य आधुनिक आर्ट स्कूलों पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा।

---

## निष्कर्ष:

बंगाल स्कूल के चित्रकारों ने भारतीय कला को एक नई पहचान दी। उन्होंने न केवल विदेशी प्रभाव का विरोध किया बल्कि भारत की आत्मा, संस्कृति और परंपराओं को चित्रों के माध्यम से

जीवंत कर दिया। उनकी कला आज भी प्रेरणा का स्रोत है और भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण की अमूल्य धरोहर मानी जाती है।

---

यदि आप चाहें, तो मैं इन चित्रकारों की प्रमुख कृतियों के चित्र भी दिखा सकता हूँ या एक चार्ट/सारणी बनाकर सारांश दे सकता हूँ।